'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 18 | 4 दिसम्बर, 2017 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

अज्ञान को ही मान रहे हैं ज्ञान : संघ प्रमुख श्री

हम अज्ञान से घिरे हुए हैं और उसे ही ज्ञान मान रहे हैं। अनेक भ्रांतियों को ही सत्य मान बैठे हैं और उन्हीं भ्रांतियों को धर्म मानकर स्वयं को धार्मिक माने बैठे हैं। यथार्थ गीता हमें इन्हीं भ्रांतियों का भान करवाकर अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में सहायक बनाती है। हम श्रेष्ठ मार्ग के अनुगामी बनें और हमारे कदम श्रेष्ठता की ओर बढ़ें, गीता इसका मार्ग प्रशस्त करती है। जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय 'तनाश्रम' में आयोजित सर्वसमाज स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने 28 नवम्बर को उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि गीता किसी जाति, धर्म, देश, काल के दायरे में सीमित नहीं है बल्कि हृदयस्थ परमात्मा को पहचानने का सार्वकालिक व सार्वदेशिक उपदेश है। इसको बार-बार पढ़ने से यह हमारे समझ में आएगी, हर बार पढ़ने पर नवीन सत्य उद्घाटित होगा एवं अभ्यास द्वारा इसे जीवन में उतारने पर जीवन धन्य हो जाएगा। गीता हमें संन्यासी बनने को नहीं कहती बल्कि जीवन के समस्त व्यापार करते हुए ईश्वरोन्मुख करती है। इस अवसर पर उपस्थित समस्त बंधुओं को यथार्थ गीता की प्रति भेंट की गई। नरेन्द्र माली एवं जितेन्द्र सुथार ने भी इस विषय पर अपने विचार रखे।

स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी के निर्देश पर सीमांत क्षेत्र जैसलमेर में यथार्थ गीता वितरण के कार्यक्रम के तहत यह स्नेहमिलन आयोजित किया गया था। इसके उपरान्त बार एसोसिएशन जैसलमेर में संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में जिला एवं सत्र न्यायाधीश मदनलाल भाटी की अध्यक्षता में कार्यक्रम रखा गया जिसे संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने गीता को सर्वकालिक शास्त्र बताते हुए स्वामीजी का परिचय दिया एवं गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ बनाए जाने की मांग की। न्यायाधीश मदनलाल भाटी एवं न्यायाधीश महेश शर्मा ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जैसलमेर, उच्च माध्यमिक विद्यालय जैसलमेर में भी संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में गीता वितरित की गई। इसके पूर्व 27 नवम्बर को भी स्वामी विवेकानंद बाल निकेतन जैसलमेर, आदर्श विद्या मंदिर जैसलमेर, नेहरू बाल मंदिर जैसलमेर आदि विद्यालयों में विद्यालय स्टाफ को यथार्थ गीता की प्रतियां भेंट की गई। उल्लेखनीय है कि स्वामी जी के आदेश पर यथार्थ गीता की 4000 प्रतियां सीमांत क्षेत्र के शिक्षकों, अधिवक्ताओं आदि बुद्धिवादी वर्ग में वितरित की जा रही हैं।

'अबकी बार सौ के पार'

राजस्थान प्रशासनिक सेवाओं में विगत वर्षों में हमारे समाज के युवाओं का चयन प्रतिशत बढ़ा है। 2016 के परिणाम में 48 युवा अधिकारी बने और इससे पूर्व वाले बैच में यह संख्या 75 के पार थी। इस बार नवचयनित युवाओं एवं इनसे पूर्व के अधिकारियों ने निर्णय लिया है कि अधिकमत युवाओं को प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाए एवं निकट भविष्य की भर्ती में संख्या 100 के पार ले जाने का प्रयास किया जाए। इसी प्रयास के तहत युवा अधिकारी समाज के अध्ययनरत युवाओं से मिलकर मार्गदर्शन कर रहे हैं। इसी कड़ी में 26 नवम्बर को मारवाड़ राजपूत सभा भवन परिसर में एक मार्गदर्शन कार्यशाला रखी गई जिसमें लगभग 200 युवा शामिल हुए। इनमें 38 युवा ऐसे थे जिन्होंने एक या अधिक बार RAS Mains दिया है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'एक से अनेक होने का मार्ग है संघ'

श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य तनसिंह जी के चिंतन और संकल्प का मूर्त रूप है। यह अनेकों को एक करने का नहीं बल्कि एक से अनेक होने का मार्ग है। एक का विचार सभी का विचार बन जाए, एक का ध्येय सभी का ध्येय बन जाए, एक ही पीड़ा सभी की पीड़ा बन जाए यह संघ की साधना का मूल भाव है। यह स्वयं जागृत होकर अनेकों को जागृत करने का मार्ग है। इसके लिए एक निश्चित कार्यप्रणाली द्वारा इस प्रकार के संगठन के संस्कार पैदा करने के लिए संघ कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में फरीदाबाद के महाराणा प्रताप भवन में आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने उपयुक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारा समाज वह समाज है जिसने जीवन के हर क्षेत्र में सीमाएं बांधी हैं। वीरता, त्याग, ज्ञान, तपस्या, दान, लोक कल्याण आदि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें हमारे पूर्वजों ने आदर्श स्थापित नहीं किया है। सिर कटने के बाद भी 14-14 मील लड़ने के उदाहरण हमारे समाज में ही मिलते हैं। इन सबका कारण हमारे घरों का वातावरण था। वहां उन्हें बचपन से ही क्षत्रियत्व का शिक्षण एवं अभ्यास करवाया जाता था। लेकिन कालांतर में वह वातावरण लुप्त प्रायः हो गया। गुरुकुल आधारित शिक्षण प्रणाली का लोप हो गया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल रोजगार तक सीमित हो गई। शिक्षा का उद्देश्य केवल प्राप्त करना सीखाना रह गया ऐसे में त्याग मूलक क्षात्र वृत्ति का शिक्षण व अभ्यास करवाने के लिए पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

अबकी... 44 लोग ऐसे थे जिन्होंने RAS Pre दिया है एवं Mains की तैयारी कर रहे हैं। इनमें से कुछ लोग सरकारी सेवा में हैं। 110 लोग एकदम नए या अन्य परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। इस कार्यशाला में पुष्पा कंवर सिसोदिया, सज्जनसिंह सांकड़ा, महावीरसिंह जोधा, वीरेन्द्रसिंह शेखावत, जितेन्द्रसिंह गिलाकोर, गोपालसिंह सोलंकी, नीतु कंवर राठौड़, दिलीप प्रतापसिंह आदि नव चयनित अधिकारियों ने मार्गदर्शन दिया। सभी से विवरण पत्र भरवाए गए। सभी प्रतिभागियों की अलग-अलग श्रेणियां बनाकर उनकी आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन का कार्यक्रम बनाया जाएगा एवं तद्नुसार मार्गदर्शन दिया जाएगा। इससे पूर्व बाड़मेर छात्रावास, जैसलमेर व पोकरण छात्रावास में भी इन अधिकारियों ने सम्पर्क किया है एवं प्रशासनिक सेवाओं में चयन संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाई।

एक से... प्रातः 10.30 बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में शंका समाधान का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें संचालन प्रमुख जी ने समाज बंधुओं के अनेक प्रश्नों के उत्तर देते हुए संघ संबंधी जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के आयोजक एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह पाण्डुराई ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ समाज के लिए अनमोल निधि है जो निरंतर समाज में संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। नई पीढ़ी उत्साह के साथ संघ कार्य को विस्तार देने में जुटी हुई है। उन्होंने सभी से अपने बालक-बालिकाओं को संघ के शिविरों में भेजने का आग्रह किया। कार्यक्रम में मातृ शक्ति के साथ-साथ बड़ी संख्या में समाज बंधुओं ने भाग लिया। अंत में स्नेहभोज के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। सभी ने ऐसे कार्यक्रमों द्वारा निरन्तर संघ से जुड़े रहने के संकल्प के साथ विदाई ली।

सेखाला में दिशा बोध

शेरगढ़ क्षेत्र में संघ के स्वयंसेवक भैरोंसिंह बेलवा प्रति सप्ताह किसी एक गांव में जाकर राजपूत युवाओं से संवाद करते हैं एवं उन्हें व्यक्तिगत जीवन में किए जाने वाले कार्यों एवं रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में बताते हैं। साथ ही संघ का परिचय देकर संघ साहित्य के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करते हैं। 26 नवम्बर को सेखाला के युवाओं से मिलकर ऐसी ही चर्चा की। प्रांत प्रमुख चन्द्रवीर सिंह भाळू इनके साथ रहे।

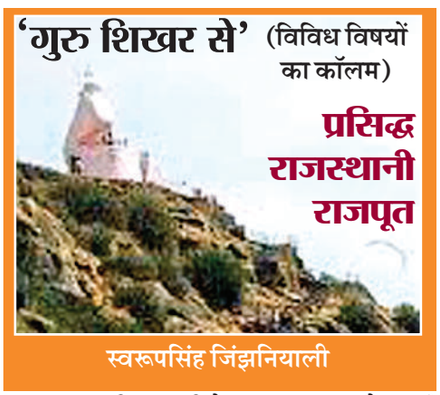

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारत की आजादी के बाद राजस्थान के राजपूतों ने अपनी प्रतिभा से अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा को दिखाने वाली कुछ विभूतियों का यहां पर वर्णन कर रहा हूं। महाराष्ट्र के अमरावती क्षेत्र से संबंध रखने वाली तथा राजस्थान के लोसल (सीकर) की बहु महामहिम पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल (सोलंकी) पत्नी देवीसिंह शेखावत हैं। वे राज्यसभा की उप सभापति एवं राजस्थान की राज्यपाल भी रही हैं। भैरोसिंह शेखावत भारत के उप राष्ट्रपति एवं तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे हैं। वे एक बार भारत के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार भी रहे। कल्याणसिंह कालवी, जसवंतसिंह जसोल तथा चन्द्रेश कुमारी कटोच केन्द्रीय मंत्रिमंडल में केबिनेट मंत्री रहे। जसवंतसिंह राज्यसभा में विपक्ष के नेता एवं एक बार उप राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रहे। भंवर जितेन्द्रसिंह अलवर राज्यमंत्री (केन्द्र) रहे तथा वर्तमान के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में राज्यवर्धनसिंह राठौड़ एवं गजेन्द्रसिंह शेखावत राज्यमंत्री हैं। जनरल अजयसिंह झाला (कुनाड़ी कोटा) आसाम के राज्यपाल रहे हैं। वी.पी. सिंह बदनोर अभी पंजाब के राज्यपाल है। महारावल लक्ष्मणसिंह डूंगरपुर, राजा गोपालसिंह भाद्राजून एवं दीपेन्द्रसिंह शेखावत राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष रहे हैं। देवेन्द्रसिंह बड़लियावास विधानसभा उपाध्यक्ष रहे। वर्तमान विधानसभा के उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह शाहपुरा हैं। तनसिंह जी बाड़मेर पहली विधानसभा में कुछ समय विपक्ष के नेता रहे। प्रदेश की राजनीति में तनसिंह जी बाड़मेर महाराजा हरिशचन्द्र झालावाड़, खेतसिंह राठौड़, गुलाबसिंह शक्तावत, देवीसिंह भाटी, श्रीमती निर्मला कुमारी शक्तावत, झूंझारसिंह हाड़ा, मोहरसिंह लाखाऊ, नारायणसिंह मसूदा, हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा, दिग्विजयसिंह उनियारा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। ओलम्पियन निशानेबाज महाराजा डॉ. करणीसिंह बीकानेर लगातार पांच बार निर्दलीय सांसद रहे। राजमाता गायत्री देवी जयपुर से लगातार तीन बार स्वतंत्रत पार्टी से सांसद रहीं। वे राजस्थान की पहली राजपूत महिला सांसद थीं।

पद्मश्री रानी लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत विधायक एवं सांसद रही हैं। वे राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्षा (एक मात्र राजपूत) रह चुकी हैं। विश्वविद्यालयी छात्र राजनीति में राजेन्द्रसिंह राठौड़, राजपाल सिंह शेखावत (दोनों राज्य के केबीनेट मंत्री), प्रतापसिंह खाचरियावास, रणवीर सिंह गुड़ा राजस्थान विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बनने के बाद विधायक बने। जालमसिंह रावलोत एवं बाबूसिंह राठौड़, जोधपुर विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष बनने के बाद विधायक बने एवं इसी विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष रहने के बाद गजेन्द्रसिंह शेखावत जोधपुर से सांसद बने एवं अभी केन्द्र में मंत्री हैं। डॉ. नगेन्द्रसिंह डूंगरपुर (पद्म भूषण) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे। एडमिरल विजयसिंह शेखावत एवं एडमिरल माधवेन्द्रसिंह नाथावत भारतीय नौ सेना के अध्यक्ष रह चुके हैं। अजय विक्रमसिंह राठौड़ बाघसुरी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड के मुख्य सचिव रहे हैं तथा केन्द्र सरकार के रक्षा सचिव भी रह चुके हैं। न्यायाधीश जवानसिंह राणावत राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे हैं। जोरावरसिंह राठौड़ चौरड़िया, अमरसिंह शेखावत कछोर, देवेन्द्रसिंह भाटी राज्य के पुलिस महकमे के सिरमोर रह चुके हैं। वर्तमान में अजीतसिंह शेखावत हाल ही में राजस्थान पुलिस महानिदेशक पद से रिटायर्ड हुए हैं। फतेहसिंह जसोल गुजरात सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव रहे हैं। ऋषिराज सिंह भाटी (पूंगल) केरल सरकार में पुलिस महानिदेशक हैं। राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के रामसिंह (आईएएस), देवेन्द्रसिंह भाटी (आईपीएस) एवं यतीन्द्रसिंह (उत्तरप्रदेश निवासी तथा राजस्थान केडर के आईएएस) अध्यक्ष रहे हैं। आईएफएस इन्द्रजीत सिंह मसूदा, सावित्री कुमारी कुनाड़ी राजेन्द्रसिंह बाघसुरी रहे हैं। जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह स्पेन में, उनके पुत्र ब्रिगेडियर सवाई भवानीसिंह ब्रुनेई में तथा महाराज गजसिंह जोधपुर वेस्ट इण्डिज के ट्रीनिडाड एवं टोबेगो में भारत के राजदूत रहे हैं।

हवालदार मेजर पीरूसिंह शेखावत व मेजर शैतानसिंह भाटी को सर्वोच्च सेना सम्मान परमवीर चक्र मिल चुका है। कर्नल किशनसिंह राठौड़ चूरू, राइफल मैन धौंकलसिंह भाटी सेखाला, ब्रिगेडियर रघुवीर सिंह राजावत, ब्रिगेडियर उदयसिंह भाटी गड़ा, नायक सुगन सिंह राठौड़ ईसरा, ब्रिगेडियर सवाई भवानी सिंह जयपुर, ले. जनरल हणूतसिंह जसोल एवं एयर वाइस मार्शल चन्दनसिंह बागावास को युद्ध में अदम्य साहस दिखाने पर महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। कर्नल सौरभसिंह शेखावत तीन बार एवं मेजर दीपिका राठौड़ दो बार दुनिया की सबसे ऊंची पहाड़ी चोटी माउंट ऐवरेस्ट फतह कर चुकी हैं। लेफ्टिनेट स्नेहा शेखावत(पूज्य तनसिंह जी की दोहिती) के रूप में गणतंत्र दिवस परेड दिल्ली में वायुसेना की टुकड़ी का नेतृत्व पहली महिला ने किया। कर्नल राज्यवर्धनसिंह राठौड़ (केन्द्र सरकार के मंत्री) ने ग्रीस ओलम्पिक में भारत की तरफ से पहला व्यक्तिगत रजत पदक (निशानेबाजी) जीता था। उन्हें खेलों का सर्वोच्च सम्मान राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार भी मिला है। राजसिंह डूंगरपुर भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष रहे हैं। हनुवन्तसिंह बांसवाड़ा ने अपने पहले ही अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट टेस्ट मैच में शतक जमाया था। मगनसिंह राजवी भारतीय फुटबाल टीम के कप्तान रहे हैं। राजश्री कुमारी बीकानेर, भुवनेश्वरी कुमारी कोटा, अपूर्वी चन्देला को निशानेबाजी में अर्जुन पुरस्कार मिला वहीं भुवनेश्वरी कुमारी अलवर को स्क्वेश में अर्जुन पुरस्कार मिला। घुड़सवारी में रघुवीर सिंह शेखावत, बास्केटबाल में जोरावरसिंह शेखावत तथा हनुमानसिंह राठौड़ (मास्को ओलम्पिक 1980), ऐथलीट रामसिंह शेखावत, गोल्फर लक्ष्मणसिंह रावटी, तैराक भंवरसिंह शेखावत, निशानेबाज भीमसिंह कोटा, पोलो में कर्नल किशनसिंह, जयपुर महाराज सवाईमानसिंह आदि का देश-विदेश के खेल जगत में दबदबा रहा है। गुरुजी भगवानसिंह गौड़ (राजगढ़) बास्केट के अन्तरराष्ट्रीय कोच रहे हैं जी.सी.ए. (गर्वन्टमेन्ट कालेज अजमेर) बरसों तक उनके मार्गदर्शन में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर टूर्नामेन्ट की सिरमौर रही तथा उनके सानिध्य में अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ी निकले।

अविनाश चम्पावत (मालारी पाली) ने आईएएस परीक्षा में भारत भर में दूसरा स्थान प्राप्त किया। पल्लवी खंगारोत (रोजड़ी) ने आरएएस में राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया। डीआईजी गुमानसिंह भाटी (पिथला) को देश का प्रथम राष्ट्रपति पुलिस एवं अग्निसेवा पदक मिला। आईपीएस नारायणसिंह भाटी (सिहड़ा) को पुलिस सेवा के लिए पद्मश्री पुरस्कार मिला। भारतीय मौसम विभाग के निदेशक रहे लक्ष्मणसिंह राठौड़ की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय मौसम वैज्ञानिक की है। वे ध्रुव की यात्राएं भी कर चुके हैं।

यूपी निवासी एवं राजस्थान को कर्मभूमि बनाने वाले जल भागीरथी फाउन्डेशन के वाटरमैन राजेन्द्रसिंह को एशिया का नोबल कहा जाने वाला 'रोमन मैग्सैसे पुरस्कार' मिला है। पोलो खिलाड़ी रावराजा हणूतसिंह, 1971 युद्ध के हीरो जनरल सगत सिंह चूरू, नशा मुक्ति आंदोलन चलाने वाले समाजसेवी राज्यसभा के मनोनीत सांसद नारायणसिंह भाटी माणकलाव को पद्म भूषण सम्मान मिल चुका है। रानी लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत, नारायणसिंह भाटी मालूंगा का साहित्य राज्य की पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाया जाता है। जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे डॉ. लक्ष्मणसिंह राठौड़ (रोडा) राजनीति विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञाता हैं। पद्मश्री कृपालसिंह शेखावत (मऊ) ब्लू पोटरी (नीली चीनी मिट्टी कला) के जनक माने जाते हैं। आध्यात्म में बाला सतीजी, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दादा गुरु एवं गोरख पीठाधीश्वर योगी दिग्विजय नाथ (राणावत कांकरवा-मेवाड़), परमहंस स्वामी अड़गड़ानंद (रावलोत भाटी ओसियां) का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। समाजसेवा में पूज्य तनसिंह जी, श्रद्धेय आयुवानसिंह हुडील (नागौर), ठा. मदनसिंह दांता (सीकर), ठा. रघुवीरसिंह जावली (अलवर) अग्रणी रहे हैं।

संघ प्रमुख श्री का मेवाड़ व वागड़ प्रवास

अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत माननीय संघ प्रमुख श्री 11 से 14 नवम्बर तक मेवाड़ एवं वागड़ क्षेत्र के प्रवास पर रहे। 11 नवंबर को भीलवाड़ा में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होकर चित्तौड़ पहुंचे एवं रात्रि विश्राम वहीं किया। 12 नवम्बर को चित्तौड़ में पारिवारिक स्नेहमिलन सहित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर अपराह्न पश्चात् उदयपुर पहुंचे। उदयपुर में प्रेसवार्ता में पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए इतिहास के गौरवशाली पात्रों पर व्यवसायिक हितों के लिए फिल्में बनाकर उनका चरित्र हनन करने के प्रयासों को निंदनीय बताया एवं साथ ही संघ की कार्यप्रणाली से संबंधित प्रश्नों के जवाब दिए। शाम 5.30 बजे उदयपुर में रहने वाले राजपूत परिवारों के पारिवारिक स्नेहमिलन में शामिल हुए। स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के कुछ समय पहले एक 22 वर्षीय युवक के अंतर में उठे संकल्प का परिणाम है आज का श्री क्षत्रिय युवक संघ। उन्होंने कहा कि प्रहरी जब सो जाता है तो हानि अवश्यंभावी है इसलिए संघ विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा समाज के सदैव से प्रहरी रहे आप सबको जगाने का काम कर रहा है। इसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। मीरा मेदपाट भवन में इस पारिवारिक स्नेहमिलन एवं स्नेहभोज कार्यक्रम में शामिल होकर अलख नयन मंदिर पधारे एवं वहीं रात्रि विश्राम किया।

आसपुरा

चीतरी

13 नवम्बर को प्रातः अल्पाहार के पश्चात् साथियों सहित वागड़ क्षेत्र के लिए प्रस्थान किया एवं 10.30 बजे आसपुर में सामाजिक कार्यकर्ताओं के स्नेहमिलन में शामिल हुए। यहां उन्होंने क्षत्रिय के स्वाभाविक गुणों की चर्चा करते हुए कहा कि जीवित रहने की आवश्यक शर्त उपयोगिता है। जो अपनी उपयोगिता खो देता है उसकी सार्थकता समाप्त हो जाती है। इसलिए केवल सुनना और सहमत होना ही पर्याप्त नहीं बल्कि रुग्णावस्था को प्राप्त हो चुकी समाज माता के स्वास्थ्य लाभ के लिए कर्मशील होना पड़ेगा। आसपुर से वालाई पहुंचे एवं वहां दोपहर का भोजन कर विश्राम किया। अपराह्न 4.30 बजे लाम्बा पारड़ा पहुंचे एवं वहां लाखनसिंह लाम्बा पारड़ा के नए घर के गृह प्रवेश के अवसर पर आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन में शामिल हुए। इस स्नेहमिलन में लाम्बा पारड़ा के सभी परिवारों के अलावा आसपास के गांवों एवं बांसवाड़ा के परिवार भी शामिल हुए। बांसवाड़ा के पूर्व राज परिवार के महारावल जगमालसिंह भी पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि युग के प्रभाव से हमारे सामूहिक परिवारों की परम्परा टूटी है। सहनशीलता के अभाव में एकल परिवार बढ़े हैं। एकल परिवारों में भी अंतर्द्वंद चलता रहता है यह सब हमारे पारंपरिक संस्कारों के अभाव का परिणाम है। इसीलिए संघ आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करने के कार्यक्रम निरंतर चला रहा है। आवश्यक है कि आप इन कार्यक्रमों के सहभागी बनें।

इस कार्यक्रम में यर्थाथ गीता वितरण का भी कार्यक्रम रखा गया। लांबा पारड़ा में भोजनोपरान्त वालाई पहुंचे एवं रात्रि विश्राम किया। 14 नवम्बर को हणवंत सिंह सज्जनसिंह का गड़ा के आवास पर अल्पाहार के पश्चात सागवाड़ा के पाटीदार सेवा संस्थान के विद्यालय में बाल दिवस कार्यक्रम में शामिल होकर नन्हें-मुन्नों को आशीर्वाद दिया। सागवाड़ा से चीतरी पहुंचे जहां जैन संत आचार्य कनक नंदी जी के बुलावे पर उनसे मिलने गए। जैन मुनि 2004 से लगातार संघ की मासिक पत्रिका संघशक्ति के पाठक हैं एवं संघ की कार्यप्रणाली से परीचित हैं। मुनि ने कहा कि क्षत्रियों की इस उच्च श्रेणी की संस्था से मैं अभिभूत हूं जो समाज में विचार क्रांति का मंत्र फूंकने में संलग्न है। मैं संघशक्ति का नियमित पाठक हूं एवं संघ के दूरगामी लक्ष्य से परीचित हूं। आज संघ प्रमुख श्री से मिलकर मैं गद्गद हूं। माननीय संघ प्रमुख श्री ने इस अवसर पर कहाकि मैं तो संन्यासी नहीं हूं बल्कि गृहस्थ हूं, ऐसा गृहस्थ जिसका स्वयं का न तो मकान है, न परिवार है और न ही कोई संपत्ति। ईश्वर ने एक सामाजिक दायित्व दिया है उसे निभा रहा हूं। चाह कुछ भी नहीं है लेकिन संतों का आशीर्वाद सदा से बना रहा है। इस अवसर पर जैन मुनि द्वारा एक समारोह भी रखा जिसे संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अमृत तत्व की रक्षा करना ही क्षत्रियत्व है। सभी प्रकार की क्षति से रक्षा करना क्षत्रिय का दायित्व है। समारोह में श्रीफल, शॉल आदि भेंट कर संघ प्रमुख श्री का सम्मान किया गया। वहां से अल्पाहार लेकर उदयपुर के लिए रवाना हुए। उदयपुर में साथी स्वयंसेवकों संग प्रताप गौरव स्मारक पहुंचे एवं उसका अवलोकन किया। रात्रि भोजन सुरेन्द्रसिंह रोलसाबसर के घर कर रात्रि रेल से जयपुर के लिए रवाना हुए।

बालोतरा व बीकानेर में कर्मचारी प्रकोष्ठ की कार्यशाला

बालोतरा के वीर दुर्गादास बोर्डिंग हाउस में 19 नवम्बर को संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ की एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें बालोतरा, सिवाणा, समदड़ी, गिड़ा, कल्याणपुर आदि क्षेत्रों के कर्मचारी बंधु शामिल हुए। सांघिक परम्परानुसार प्रारम्भ हुई कार्यशाला में सर्वप्रथम प्रकोष्ठ का परिचय एवं भूमिका बताते हुए कहा गया कि संघ व्यक्तित्व निर्माण का मूल काम कर रहा है। साथ-साथ संघ के स्वयंसेवकों एवं समाज के अन्य घटकों का समाज के लिए अधिकतम उपयोग हो सके इस हेतु विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन किया गया है। कर्मचारी प्रकोष्ठ समाज के कर्मचारियों को समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने के साथ-साथ उन्हें संघ से जोड़कर संघ के दर्शन को आत्मसात करने हेतु प्रेरित करने का प्रयास है। इसके बाद हुई परिचर्चा में जैतमालसिंह बिशाला, बिशनसिंह चांदेसरा, डूंगरसिंह अराबा, मोहनसिंह, पूर्णसिंह सिणेर, कानसिंह डाबड़ा, अर्जुनसिंह अजीत, अर्जुनसिंह महेचा, गंगासिंह कक्कु, चंदनसिंह चांदेसरा, जेठूसिंह कुसीप, सुमेरसिंह कालेवा, हनवंतसिंह मवड़ी, चंदनसिंह थोब आदि बंधुओं ने भाग लिया। परिचर्चा में सेना में रोजगार के अवसरों का लाभ लेने, सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार करने, नवोदय, सैनिक स्कूल आदि में प्रवेश परीक्षा की जानकारी जीवन बीमा क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु मार्गदर्शन छात्रावासों के पूर्ण उपयोग, सरकारी कार्यालयों में समाज बंधुओं का सहयोग करने, बालिका शिक्षा आदि विषयों पर चर्चा की गई। परिचर्चा के पश्चात अलग-अलग समूहों में बैठकर इन सब सुझावों को लागू करने की योजना बनाने के लिए चर्चा की गई। विद्यार्थियों के मार्गदर्शन हेतु छात्रावास में नियमित रूप से सेवाएं देने की कुछ बंधुओं ने जिम्मेदारी ली। पंचायती राज से जुड़े कर्मचारी बंधुओं ने योजनाओं के प्रचार-प्रसार की जानकारी ली। शीघ्र ही विद्यार्थियों की एक सामान्य मार्गदर्शन कार्यशाला रखने का भी निर्णय हुआ। अंत में कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव ने बताया कि कर्मचारी प्रकोष्ठ हम सब को समाज सापेक्ष बनाने का प्रयत्नशील है। हम सब आज जिस स्थिति में पहुंचे हैं उसमें समाज का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग है, हम उस ऋण से उऋण हो सके इसका मार्ग हमें संघ का यह प्रकोष्ठ उपलब्ध करवाता है।

बीकानेर में कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक 26 नवम्बर को नारायण निकेतन में संपन्न हुई। बैठक में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ, कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव, ब्लाक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी मूलसिंह, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा जोरावर सिंह सहित विभिन्न विभागों के कर्मचारियों ने भाग लिया। बैठक के प्रारम्भ में कर्मचारी प्रकोष्ठ का परिचय, उद्देश्य एवं अब तक हुई कार्यशालाओं की जानकारी दी गई। बीकानेर में प्रकोष्ठ का सदस्यता अभियान चलाकर अधिकतम कर्मचारियों को जोड़ने के लिए विभागवार दायित्व सौंपा गया। शिक्षा निदेशालय का दायित्व जोरावर सिंह, पशुपालन विभाग का गोपालसिंह नांगल, पुलिस विभाग का रविन्द्रसिंह राठौड़, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का करणपालसिंह भाटी सहकारिता विभाग का भूपेन्द्रसिंह गुड़ा व रेलवे का गंगासिंह बीनादेसर ने दायित्व लिया। पूंगल क्षेत्र में सदस्यता अभियान का दायित्व गोपालसिंह भाटी व तिलक नगर का दायित्व प्रदीपसिंह टांई व विक्रमसिंह काली पहाड़ी ने लिया। बैठक में तय किया गया कि आगामी 7 जनवरी को प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी कर रहे युवाओं की एक दिवसीय कार्यशाला रखी जाए। इसके लिए स्थान एवं कार्य योजना का दायित्व जोरावरसिंह ने लिया। बैठक में 22 दिसम्बर को स्थापना दिवस, बालिका प्रा.प्र.शि. एवं बालकों के मा.प्र.शि. को लेकर भी चर्चा की गई।

संपादकीय

सनातन मूल्य पाते हैं सर्वकालिक सम्मान

विगत दिनों सवाई जयसिंह जी की जयंती पर सोशल मीडिया में एक गैर राजपूत की पोस्ट आई कि पंडित नेहरू ने अपनी डिसकवरी ऑफ इंडिया में सवाई जयसिंह को मध्यकालीन घोर अंधियारी रात में चमकता सितारा बताया है। उन्होंने गणित, खगोल, ज्योतिष, नगर नियोजन और वैज्ञानिक अन्वेषण को उस युग में ऊंचाइयां प्रदान कीं जब पूरे भारत में कोई मुश्किल से इसका कद्रदान रहा होगा। लेकिन विडंबना यह है कि ऐसी शख्शियत के जन्म दिन पर उनके ही बसाए शहर के समाचार पत्रों में कोई फीचर या संपादकीय तो बड़ी बात है उनके लिए दो पंक्तियां भी ढंग से नहीं छापी गई। यह विश्लेषण एक गैर राजपूत द्वारा उनकी जयंती पर प्रकट किया गया। हमारे लिए यह विश्लेषण विचारोत्तेजक है। यह विश्लेषण हमें सोचने को मजबूर करता है कि हम जिस भौतिक उन्नति को लेकर इतने उत्साहित हैं, उस भौतिक उन्नाति के लिए अपने समय काल में सर्वाधिक काम करने वाला हमारा पूर्वज उपेक्षित क्यों है? मंदिर बनवाना, धर्मशालाएं बनवाना, लोक कल्याणकारी योजनाएं चलाना आदि जिन कामों को हम श्रेष्ठ काम मानते हैं वे सब करने वाले मानसिंह हमारे बीच या संसार के बीच उपेक्षित क्यों हैं? यही प्रश्न यह विचार करने को मजबूर करते हैं कि जिस समय काल में सवाई जयसिंह जी हुए उसी समय काल में दुर्गादास जी हुए। लेकिन दुर्गादास जी की जयंती हम सबको याद रखनी नहीं पड़ती बल्कि हर क्षेत्र में स्वतः स्फूर्त रूप से मनाई जाती है लेकिन जयसिंह जी की जयंती प्रयासपूर्वक आयोजित कर मनुहार कर लोगों को बुलाना पड़ता है। सवाई जयसिंह जी के ही समयकालीन शिवाजी महाराज के लिए कोई इस प्रकार की विश्लेषणात्मक पोस्ट नहीं लिखनी पड़ती है लेकिन सवाई जयसिंह जी के लिए इस प्रकार की पोस्ट आती है। प्रताप जयंती पूरे देश में मनाई जाती है लेकिन मानसिंह जी की जयंती मनाने के लिए लोगों को समझाना पड़ता है जबकि रणकौशल, राज्य विस्तार, मंदिर बनवाने, भवन बनवाने, संपत्ति अर्जित करने, कलाकारों, साहित्यकारों, पंडितों, पूजारियों आदि के संरक्षण, अकबर की छद्म धार्मिक सहिष्णुता को असफल करने में मानसिंह जी अपने काल में सबसे आगे थे। तब प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ऐसा क्या है कि महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज या दुर्गादास जी की जयंती स्वतः स्फूर्त मनाई जाती है पर इनकी नहीं। इस विषय में हम विश्लेषण करें तो पाएंगे कि संसार हमेशा सर्वकालिक सनातन मूल्यों को सम्मान की दृष्टि से देखता है। स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। अपनी अस्मिता के लिए हर कोई संघर्ष करना पसंद करता है। किसी मजबूरी या लालच वश यदि वह ऐसा नहीं कर पाता, तो भी पसंद तो उसकी यही रहती है। स्वाभाविक रूप से तो वह इधर ही आकर्षित होता है। स्वतंत्रता स्वाभिमान आदि स्वाभाविक मूल्यों की ओर वह स्वभावतः आकर्षित होता है और उनको नमन करता है। यह अलग विषय है कि वह स्वयं उनका कितना पालन कर पाता है या अपने जीवन में कितना उतार पाता है? ऊपर जिन महापुरुषों का जिक्र किया गया है यदि उनके जीवन को भी हम देखे तो मानसिंह जी भले ही किसी रणनीति के तहत अकबर के साथ बने रहे हों लेकिन महाराणा प्रताप के प्रति सम्मान में उनके मन में कोई कमी नहीं थी और भले ही अकबर के आदेश पर उन्हें प्रताप से लड़ना पड़ा हो लेकिन युद्ध के उपरांत भी प्रताप बने रहे, उनका स्वाभिमान व स्वतंत्रता बनी रहे इसके लिए मानसिंह जी ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रयास किए ऐसा इतिहासकार मानते हैं।

सवाई जयसिंह भले ही औरंगजेब के साथ रहें हो लेकिन अपने पुत्र का जीवन संकट में डालकर जिस प्रकार उन्होंने शिवाजी को औरंगजेब की कैद से मुक्त करवाया वह इस बात का प्रतीक है कि वे शिवाजी की स्वतंत्रता और स्वाभिमान बनाए रखने के समर्थक ही थे। इस पूरे विश्लेषण का यही अर्थ निकलता है कि हमारा समाज काल सापेक्ष भौतिक उन्नति को काल के प्रभाव में पसंद करता है क्योंकि यह सब काल के साथ समायोजन करने के लिए आवश्यक होती है लेकिन फिर भी स्वाभाविक रूप से तो वह स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान जैसे सर्वकालिक मूल्यों को ही पसंद करता है। इस आलोक में हमारे सबके यह समझ में आना चाहिए कि शौर्य, त्याग, धैर्य, तेज, समर्पण, स्वाभिमान, स्वतंत्रता आदि सभी सनातन मूल्य किसी काल की परिधि में नहीं समाए जाते बल्कि ये सर्वकालिक होते हैं और हमारे अंतर में विराजित सर्वकालिक परमात्मा का अंश तो इनको ही पसंद करता है और इसीलिए हम प्रताप, दुर्गादास, शिवाजी आदि नायकों को स्वाभाविक रूप से पसंद करते हैं। इस विश्लेषण का अर्थ कदापि नहीं है कि काल सापेक्ष भौतिक उन्नति व्यर्थ है। वह भी आवश्यक है और उसके बिना काल के साथ समन्वय बिठाने में कठिनाई होती है और फिर सनातन मूल्यों का भी आसानी से पालन नहीं हो पाता। इसलिए इस क्षेत्र में असाधारण काम करने वाले सवाई जयसिंह जी को भी याद किया ही जाना चाहिए, राजा मानसिंह की रणनीतिक सूझबूझ और रणकौशल का सम्मान किया ही जाना चाहिए। हमारे समाज के प्रति दुर्भावनापूर्वक विष वमन करने वालों को जवाब देने के लिए इन महापुरुषों का वास्तविक इतिहास भी संसार के समक्ष जोर-शोर से लाया ही जाना चाहिए लेकिन फिर भी यह तो ईमानदारी पूर्वक स्वीकार करना चाहिए कि सर्वकालिक अस्तित्व तो सनातन मूल्यों का ही रहता है। उन मूल्यों के निर्वहन का तरीका समयानुकूल परिवर्तित हो सकता है लेकिन उनकी प्रासंगिकता किसी काल में समाप्त नहीं होती और इन मूल्यों का निर्वहन करने वाले इतिहास पुरुषों के प्रति सर्वकालिक स्वतः स्फूर्त सम्मान इसका प्रमाण है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन्हीं मूल्यों के निर्वहन का प्रशिक्षण है।

बीकानेर व जालोर संभाग की समीक्षा बैठक

संघ के बीकानेर संभाग की समीक्षा बैठक केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के सानिध्य में 25 नवम्बर को नारायण निकेतन बीकानेर में संपन्न हुई। बैठक में आगामी 24 से 27 दिसम्बर तक होने वाले बालिका प्रा.प्र.शि. एवं 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक आयोज्य माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर (बालक) की तैयारी, व्यवस्था, संपर्क आदि को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बीकानेर संभाग में इस बार संघ स्थापना दिवस 22 दिसम्बर को संभाग स्तर पर बीकानेर में मनाने का निर्णय लिया गया है। इसके प्रचार-प्रसार की योजना बनाकर दायित्व सौंपे गए। प्रचार-प्रसार हेतु उपलब्ध रहने वाले स्वयंसेवकों की सूची बनाई गई। प्रचार सामग्री के प्रकाशन को लेकर चर्चा की गई। नोखा, कोलायत, पूंगल, डूंगरगढ़ आदि क्षेत्रों में स्नेहमिलन आयोजित कर सूचना देने का निर्णय लिया गया। बीकानेर शहर में घर-घर सम्पर्क की योजना बनाई गई। 18 से 22 दिसम्बर तक 5 दिवसीय कार्यक्रम बनाकर प्रतिदिन स्थापना दिवस निमित्ति कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया गया। अंत में सभी ने हणवंतसिंह आशापुरा द्वारा रखे गए स्नेह भोज का आनंद लिया।

जालोर संभाग के विभिन्न प्रांत प्रमुखों एवं साथी स्वयंसेवकों की एक बैठक केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में 25 नवम्बर की शाम जालोर में गणपतसिंह भंवराणी के आवास पर रखी गई। बैठक में विगत छह माह के कार्यों की समीक्षा की गई एवं आगामी दिसम्बर माह में जालोर में होने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर को लेकर योजना बनाई गई। माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर की योग्यता रखने वाले स्वयंसेवकों की सूची पर चर्चा की गई एवं प्रांतवार लक्ष्य निर्धारित कर दायित्व सौंपे गए। संघ स्थापना दिवस 22 दिसम्बर को पूरे संभाग में भाद्राजून, पुनासा एवं पाली में तीन स्थानों पर प्रांतीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया गया। आगामी 7 दिसम्बर को पूज्य तनसिंह जी की पुण्यतिथि के अवसर पर प्रत्येक मंडल में कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया गया। संघ शक्ति एवं पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के काम को गति देने की योजना बनाई गई। आगामी 31 दिसम्बर को माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के अंतिम दिन विदाई के पश्चात् शिविर स्थल वीरमदेव छात्रावास में ही विद्यार्थियों एवं युवाओं के रोजगार मार्गदर्शन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में रखने का निर्णय लिया गया एवं इसके लिए भी अपेक्षित तैयारी हेतु योजना बनाई गई।

खरी-खरी

'यह होना चाहिए'

'यह होना चाहिए' यह वाक्य आपको प्रायः सुनने या पढ़ने को मिल जाएगा। यदि आप किसी सामाजिक बैठक में जाएंगे तो आपको यही वाक्य बार-बार सुनने को मिलेगा। आजकल सोशल मीडिया का दौर है और यहां तो आपको हर दूसरा-तीसरा व्यक्ति यही कहता मिलेगा कि यह होना चाहिए। वास्तव में तो यह कहना भी बहुत सरल है कि यह होना चाहिए क्योंकि यह सब तो कहना ही होता है करना तो किसी और को होता है और किसी और को करना है इसीलिए तो यह कहा जाता है कि यह होना चाहिए या यह करना चाहिए। यदि स्वयं को करना हो तब तो भाषा मैं यह करूंगा यह हो जाएगा। लेकिन करने के नाम पर तो सब यही चाहते हैं कि कोई और ही करे बस इनका तो काम यही बताना है कि क्या होना चाहिए। विगत दिनों एक बैठक में देखने का अवसर मिला कि जब तक उसमें 'क्या होना चाहिए' यह बताने का सत्र चल रहा था तब सब लोग बढ़-चढ़ कर बता रहे थे लेकिन जब जो होना चाहिए उसे कैसे करना है यह तय करने का सत्र आया तब वह हॉल जो पहले सत्र में पूरा भरा हुआ था, आधा ही रह गया। आधे लोग क्या होना चाहिए, यह बताकर चले गए थे क्योंकि वे यह मानते हैं कि शेष लोग जानते नहीं है कि क्या होना चाहिए इसलिए उन्होंने बता दिया। अब कैसे करना है यह वे बचे हुए लोग तय करें। वास्तव में तो सलाह देना सबसे सरल काम है और इस पुनीत काम में हम सब पारंगत हैं लेकिन किसी भी सलाह को क्रियारुप देने के लिए जो श्रम चाहिए, जो समय चाहिए, जो समर्पण चाहिए उससे हम सब बचना चाहते हैं और हमारे इस बचने का ही परिणाम है कि वह हो नहीं पाता जो हमारी नजर में होना चाहिए। इसलिए संघ प्रमुख श्री कई बार कहते हैं कि जो होना चाहिए उसे करना प्रारम्भ कर दें, लेकिन यह इतना आसान थोड़े ही है। क्योंकि इसके लिए सलाह देकर निवृत नहीं होना पड़ता बल्कि उस सलाह को क्रियारूप देने के लिए तपना पड़ता है, कुछ छोड़ना और हासिल करना पड़ता है, साधन जुटाने पड़ते हैं और फिर उन्हें उस सलाह के लिए होमना पड़ता है और जब यह समझ में आ जाता है तब आदमी बोलने से पहले सोचने की मजबूर होगा कि हेतु मैं क्या कर सकता हूं?

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.11.2017 से 25.12.2017 तक	नंदु फार्म हाउस, ओबेराय फार्म हाउस के पास, कपास हेरा चौक, महिपालपुर, नई दिल्ली। निकटतम मेट्रो शंकर चौक से ऑटो सुविधा।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**टाणा,** तह. सिहोर, जिला-भावनगर (गुजरात)।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**ढीमा**, जिला-बनासकांठा (गुजरात)।
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**गांधीनगर** (गुजरात) संपर्क-महावीरसिंह 9978405810.
5.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**वडासण** हाई स्कूल, कड़ा मानसा रोड़ (गुजरात)।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017 तक	**डोभाड़ा** (गुजरात)।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 26.12.2017 तक	**सूरत** (गुजरात) संपर्क : दिलीपसिंह गड़ा 9375852588.
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 27.12.2017 तक	**मिठड़ाऊ,** जैसलमेर से म्याजलार बस द्वारा पहुंचे।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 27.12.2017 तक	**नाग खजूरी,** जिला मंदसौर (मध्यप्रदेश) संपर्क : महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ 09425978051.
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.12.2017 से 27.12.2017 तक	**अयाना,** तह. जावरा, जिला रतलाम (मध्यप्रदेश)।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	24.12.2017 से 27.12.17 तक	करणी कन्या छात्रावास, गांधी कॉलोनी, **बीकानेर।**
12.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2017 से 28.12.2017 तक	जयमल कोट पुष्कर, **अजमेर।**
13.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2017 से 28.12.2017 तक	**कोटा,** संपर्क : पिंकु कंवर पत्नी भंवरसिंह 8619927352 वीरेन्द्रसिंह तलावदा 9414396530
14.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	**गड़ियाला (बीकानेर),** बीकानेर, बज्जू, बाप से बसें उपलब्ध है।
15.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	**तेना,** जोधपुर-शेरगढ़ बस मार्ग पर स्थित।
16.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2017 से 31.12.2017 तक	वीरमदेव राजपूत छात्रावास, **जालोर।**
17.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	27.12.2017 से 30.12.17 तक	राजपूत बोर्डिंग हाऊस, **रतलाम** (मध्यप्रदेश) संपर्क : कृष्णेन्द्रसिंह सेजावता 08989897788, ब्रजराजसिंह बेडू 09425356540.
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.12.2017 से 30.12.17 तक	**ताल,** जिला रतलाम (मध्यप्रदेश) संपर्क : मदनसिंह 09893606416.
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.12.2017 से 31.12.2018 तक	कुलथाना जिला प्रतापगढ़। सम्पर्क : कुबेरसिंह सेलारपुरा 99280-51478 समुन्द्रसिंह झालो का खेड़ा 99285-54953
20.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	30.12.2017 से 01.01.2018 तक	**मोरचन्द** (गुजरात)।
21.	मा.प्र.शि. (बालक)	31.12.2017 से 06.01.2018 तक	**रोजदा,** जिला-जयपुर

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

भूल सुधार : तकनीकी गलती से संघ की मासिक पत्रिका संघशक्ति के दिसम्बर माह के अंक में कुछ शिविरों को बालिका शिविर प्रकाशित कर दिया गया है जबकि बालिका शिविर वडासण, रतलाम, पुष्कर, बीकानेर, कोटा तथा मोरचंद ही हैं। गडियाला, तेना, जालोर, ताल व रोजदा शिविरों को बालक शिविर ही पढ़ा जावे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

शिविर अनुभव

बालिका मा.प्र.शि. सिवाना

जोरावर सिंह जी के सानिध्य में यह मेरा पहला शिविर था और श्री क्षत्रिय युवक संघ में दूसरी पारी की शुरुआत। मैंने पहले शिविर 1997 से शुरू किए थे, 20 वर्ष का अन्तराल काफी लम्बा समय होता है और इस दौरान स्वयं में काफी कुछ परिवर्तन हो जाता है, पहले मैं एक किशोरी थी लेकिन अब किशोरी की मां हूं। शिविर के पहले दो दिन मेरे लिए बड़े कष्टदायक लगे क्योंकि मैं अपने पर किसी का शासन नहीं चाहती थी, दूसरा मैं जोरावर सिंह जी में रतनसिंह जी बाबोसा का अक्स देखना चाहती थी, बस यही मेरी सबसे बड़ी भूल थी। रश्मि जीजा, मीनाक्षी जीजा, रीटा जीजा, उषा जी सब में अपनी पुरानी सूखियां ढूंढ़ने लगी। मैंने कहीं पढ़ा था - 'अतीत हमेशा वर्तमान को कोसता हैं।' बस यही मैं कर रही थी, मैं अतीत की तुलना वर्तमान से कर रही थी, अब सब कुछ नया था, मुझे नए को अपने अंदर ग्रहण करना था। अब पुरानी यादों को एक तरफ रखकर नए लोगों से प्रगाढ़ता बढ़ाने का निश्चय किया। जोरावर सिंह जी बाबोसा ने 'पहला बौद्धिक अनुशासन' का दिया। अनुशासन का मतलब अनु+शासन, अपने ऊपर शासन करना तथा शासन के अनुसार अपने जीवन को चलाना ही अनुशासन है।

बाबोसा के दूसरे बौद्धिक से यह सबक लिया कि हम साधारण घराने से न होकर विशिष्ट घराने से हैं, हम अपने आप में अनुपम हैं इसीलिए हमारी कार्यशैली भी विशिष्ट होनी चाहिए, हमारी कार्यशैली तभी विशिष्ट होगी जब हमारे परिवार में वैमनस्य नहीं होगा, परिवार में वैमनस्य कैसे नहीं हो इसका उदाहरण बाबोसा ने भगवान शिव के परिवार के माध्यम से समझाया और हमारे परिवार के अलावा 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' से जुड़ने के पश्चात संघ हमारा परिवार हो जाता है, संघ ही ऐसा परिवार है जिसमें हमें शिव परिवार देखने को मिलता है, विभिन्नताओं में एकता और विषमताओं में संतुलन यह 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' में देखने को मिलता है। शिव परिवार हमने तस्वीरों में देखा है लेकिन इसका प्रत्यक्ष रूप संघ में देखा और अनुभव किया है। शिविर के माध्यम से हमने देखा है कि ऊंचे-नीचे स्तरों के बावजूद संघ परिवार सबके साथ प्रसन्नतापूर्वक समय का सद्पयोग करते हैं तथा संघ प्रसन्नतापूर्वक खेलते-खेलते हमे विशिष्टता का अहसास कराता है कि हम विशिष्ट हैं, हम किसी से कमतर नहीं हैं, हम बेकार नहीं हैं। तीसरा सबक रश्मि कंवर देलदरी के माध्यम से मिला, उन्होंने कहा आज के समय में पहनावे पर अपने विचार प्रकट करो, मैंने विचार भी प्रकट किए, अपनी बात पर भी अड़ी रही लेकिन बाद में अहसास हुआ कि बोलने से पहले सोचना जरूरी है, क्योंकि हमारे विचार ही हमारा भविष्य तय करते हैं और जिन शब्दों का प्रयोग हम करते हैं उससे बात बन भी जाती है और बिगड़ भी जाती है और सामने वाले को अत्यंत आहत भी कर सकती है। चौथे सबक में रश्मि कंवर देलदारी ने कहा कि 'कुरीतियों पर अपने विचार प्रकट करो, यहां पर भी मैं अड़ गई।' हां हमारे समाज में कई प्रकार की कुरीतियां है वो कम भी हुई हैं, लेकिन उनकी शुरुआत हम स्वयं से करें तो ज्यादा बेहतर होगा, हम प्रयास कर सकते हैं, किसी को समझा सकते हैं लेकिन मानना न मानना अगले व्यक्ति पर निर्भर करता है लेकिन इसके लिए हमें अपने प्रयास न छोड़कर अपने इरादे दृढ़ रखने चाहिए, इसके लिए कई बार अपने तरीकों को भी बदलना पड़ता है। रश्मि जीजा ने कई विरांगनाओं के बारे में बताया जो हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं जैसे देवी मदालसा के जीवन से सीख सकते हैं कि किस तरह एक मां अपने बच्चों में संस्कार निर्माण कर सकती है, वहीं प्रथम गुरु है। देश, धर्म, मर्यादा, इज्जत की रक्षा खातिर रानी पद्मिनी और सोलह हजार क्षत्राणियों ने अपने आपको पवित्र अग्नि में समर्पित कर दिया। यम के बंधनों से भी पति को छुड़ा लेने वाली सावित्री, पति के अपमान के कारण पिता के यज्ञ में अपना शरीर होम देने वाली सती और जगत जननी सीता माता इत्यादि ऐसे चरित्र हैं जो राजपूत नारियों के लिए सदा अनुकरणीय रहेंगे। अपनी माधुर्य भक्ति द्वारा मीरा ने सर्व शक्तिमान भगवान को अपने वशीभूत कर लिया, राजनीति, व्यवसाय, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में राजपूत नारियों ने अपना वर्चस्व कायम किया है धन्य है क्षत्राणियां जिनकी गाथाओं से ग्रंथ भरे पड़े हैं। 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी', सही है हममें ही कुछ ऐसी बात है कि हम औरों से अलग हैं। मैंने पढ़ा था- 'रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हो तो एक अच्छा जूता पहनकर उस पर चला जा सकता है लेकिन एक अच्छे जूते के अन्दर एक भी कंकड़ हो तो एक अच्छी सड़क पर भी कुछ कदम भी चलना मुश्किल है।' मैंने अपने जूते से कंकड़ निकाला और आराम से चल पड़ी। अर्थात् अपनी सोच और विचार बदले तो सब कुछ साफ नजर आने लगा और संघ में अपना परिवार नजर आने लगा। **श्रीमती सीमा मवड़ी**

मिथिलेश कंवर राठौड़

चुरू जिले की सुजानगढ़ तहसील के गांव गेड़ाप के निवासी दिलीपसिंह की पुत्री मिथिलेश कंवर राठौड़ ने 12वीं की परीक्षा में 86.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने हिन्दी में 96, गणित में 97 व अंग्रेजी में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए।

जान्हवी कंवर शेखावत

राजपुरा सीकर के निवासी बिजेन्द्रसिंह की पुत्री जान्हवी कंवर ने 10वीं की परीक्षा में 86.83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने अंग्रेजी में 97, संस्कृत में 96 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

हर्षवर्धनसिंह शेखावत

गांव रामजीपुरा तहसील सांभर जिला जयपुर के निवासी दिलीपसिंह के पुत्र हर्षवर्धनसिंह ने सुबोध कॉलेज जयपुर में अध्ययनरत रहते हुए एनसीसी में 'सी' सर्टिफिकेट हासिल किया है एवं अभी वहां सीनियर अंडर आफिसर है। हर्षवर्धन ने विगत 26 जनवरी को दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में भी भाग लिया था।

युवराजसिंह नाथावत

इटावा भोपजी (जयपुर) निवासी अजीतसिंह नाथावत के पुत्र युवराजसिंह ने 10वीं की परीक्षा में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं।

हिम्मतसिंह नाथावत

इटावा भोपजी निवासी रणधीरसिंह के पुत्र हिम्मतसिंह ने 10वीं की परीक्षा में 9.2 सीजीपीए हासिल किए हैं।

एकलव्य का अंगूठा-1

स्व. सांसद फूलनदेवी द्वारा नई दिल्ली के एक कक्ष में 'एकलव्य सेना' के गठन के अवसर पर सोमवार, दिनांक 6 फरवरी 1995 को स्वामी अड़गदानंद जी द्वारा उनकी जिज्ञासा पर दिया गया प्रवचन 'एकलव्य का अंगूठा' नामक छोटी पुस्तिका में संकलित है उसे यहां धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है -

महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने अभी-अभी आश्रम से प्रकाशित श्रीमदभागवद्गीता की व्याख्या 'यर्थाथ गीता' के ओडियो कैसेट का लोकार्पण किया है। उसी सन्दर्भ में पत्रकारों से मिलने का कार्यक्रम चल ही रहा था कि आपके आयोजकों में से कुछेक ने, जो हमारे आश्रम के भक्तों में हैं, निवेदन किया कि 'एकलव्य सेना' के उद्घाटन समारोह में भगवन् आप भी दो शब्द कहें।

अभी रास्ते में आपका उद्घोष सुनाई पड़ा- 'अब अंगूठा नहीं देंगे....!' अब अंगूठा नहीं देंगे....। अब अंगूठा नहीं देंगे....' एक ने शिकायत भी किया, 'महाराज जी! हम आप लोगों के पास कैसे आए? हमारे पूर्वजों में एक आया भी तो गुरुजनों ने उसका अंगूठा ही ले लिया?' आपका प्रश्न मर्माहत करने वाला है। आप सबका आक्रोश स्वाभाविक है। अधूरी जानकारी ही पूर्ण जानकारी के लिए प्रेरणा देती है। किसी कार्यक्रम के बीच यह इस प्रश्न के लिए अनुकूल अवसर तो नहीं है फिर भी आप सबका आग्रह देखते हुए प्रयास करूंगा। आचार्य द्रोण ने तो अंगूठा ही लिया था, एक आचार्य ने तो कर्ण के प्राण ही ले लिए। एक ने राजकुमारी शर्मिष्ठा को दासी बना डाला। इन आचार्यों को क्या कहा जाए? इन आचार्यों ने ही स्मृतियों की रचना कर भारत को लगभग समाप्त ही कर दिया। वस्तुतः सद्गुरु और आचार्य गुरुओं में अन्तर करना लोग भूल गए। यही आपकी शंका और संसार में व्याप्त अनर्थों का मूल कारण है। सामाजिक परिवेश से आक्रान्त आचार्य गुरु कुछ भी कर सकते हैं। आचार्य उसे कहते है जो शिक्षा दे। शिक्षा में धनुर्वेद है, आयुर्वेद है, वर्णमाला की शिक्षा है। सृष्टि में मानव जीवन में उपयोगी जितनी भी कलाएं हैं- वह सब शिक्षा के अन्तर्गत आती हैं।

पौराणिक आख्यानों में है कि प्रजापति कश्यप की दो रानियां थीं- दिति और अदिति। दिति ने दानव और अदिति से देवताओं का जन्म हुआ। इन दोनों माताओं में सौतिया डाह के फलस्वरूप उनके पुत्रों में भी अनबन होने लगी। विवाद बचाने के लिए कश्यप ने इनके लिए भू-भाग को दो भागों में बांट दिया, फिर भी दैत्यों और देवताओं में सौमनस्य नहीं हो सका। उनके ईर्ष्या-द्वेष को प्रज्वलित करने में एक घटना ने विशेष योगदान किया। देवताओं ने वृहस्पति को आचार्य पद पर अभिषिक्त कर दिया। शुक्राचार्य जी उस युग के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्होंने इसे अपना तिरस्कार समझा अतएव उन्होंने असुरों का आचार्य होना स्वीकार कर लिया। बार-बार देवासुर संग्राम का होना इन आचार्य गुरुओं की प्रतिद्वंद्विता का परिणाम था।

आचार्य वृहस्पति : देवगुरु वृहस्पति की बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म थी। वह बाहुबल की अपेक्षा बुद्धिबल और कूटनीति में अधिक विश्वास करते थे। सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। मदान्ध नहुष से देवराज इन्द्र की पत्नी शची की रक्षा उन्होंने बुद्धि-कौशल से ही की थी। एक बार एक नरेश सौ यज्ञ करके इन्द्रपद प्राप्त कर ले गए। उनका नाम था महाराज नहुष। पहले तो वह बहुत धर्मात्मा थे किन्तु इन्द्रपद पर अभिषिक्त होते ही जब वरुण, अग्नि, काल, यम, वायु तथा चन्द्रादि देवताओं ने उन्हें नमन किया तो उन्हें अहंकार हो आाया। वह सोचने लगे कि उनका प्रभाव इन सबसे बहुत अधिक है। उन्हें लगा कि इन्द्र अभी तक नहीं आया, वह कहां है? सूचना मिली कि वह तपस्या करने चला गया है। नहुष ने कहा, 'इन्द्र नहीं तो उसकी पत्नी ही सही। शची कहां है? उसे मेरी सेवा में उपस्थित करो।'

महारानी शची ने वृहस्पति से निवेदन किया, 'आाचार्य प्रवर! नहुष से मेरी रक्षा करें।' वृहस्पति ने विचार किया और कहा, 'उससे कह दो कि विप्रों की पालकी में बैठकर एक महीने आप स्वर्ग का भ्रमण करें जिससे आपके ऐश्वर्य को लोग देखें तत्पश्चात् उसी पालकी में बैठकर आप मेरे महल में आएं। मैं आपका वरण कर लूंगी।' नहुष ने विप्रो की तलाश में अनुचरों को भेजा। स्वर्ग में तो देवता रहते हैं, वहां विप्र कहां! पृथ्वी के ही विप्र पकड़े गए, वह भी भारत से। अन्यत्र यह पाए नहीं जाते। अब कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक जहां भी वे मिले हो! उनमें थे- अगस्त्य, पुलह, पुलस्ति, अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ और विश्वामित्र! सप्तर्षि नहुष की पालकी ढोते रहे, उसे महीने भर स्वर्ग की सैर कराते रहे। जिस दिन महीना पूरा हुआ, पालकी का मुख शची देवी की महल की ओर घूमा। नहुष अधीर हो उठा। उसे पालकी ढोने वालों की चाल मंद प्रतीत हुई। 'सर्प-सर्प' (शीघ्र-शीघ्र) कहते हुए उसने महर्षि अगस्त्य को पैरों से ठोकर मारा। ऋषि ने शाप दे दिया- 'जाओ, सर्प ही हो जाओ।' अजगर की तरह लहराता नहुष आकाश से नीचे आने लगा। ऋषियों से उसने प्रार्थना की, मुक्ति का उपाय पूछा तो उन्होंने कहा- 'जब कोई तुम्हें ब्राह्मण की महिमा बता देगा उस दिन तुम अजगर के इस अधम शरीर से मुक्ति पा जाओगे।'

नहुष ने जिज्ञासा की, 'भगवन्! कौन बताएगा मुझे ब्राह्मणों की महिमा?' उन महापुरुषों ने कहा, 'इस समय सृष्टि में कोई नहीं है जो ब्राह्मण की महिमा जानता हो। द्वापर में वनवास काल में युधिष्ठर तुम्हें ब्राह्मण की महिमा बताएंगे तभी तुम इस अधम योनि से मुक्त होकर पुनः इन्द्रपद प्राप्त कर सकोगे।' सन्त दयालु होते हैं। यद्यपि नहुष ने एक महीने तक उनसे पालकी ढुलवाया फिर भी उन्हें कोई क्रोध नहीं था। उसके उद्धत आचरण पर उन्हें क्रोध आया भी तो पुनः मुक्ति का आशीर्वाद भी दिया। इस प्रकार शची की रक्षा के प्रकरण में वृहस्पति ने स्वयं हस्तक्षेप करना आवश्यक नहीं समझा बल्कि बुद्धि का प्रयोग कर नहुष को दण्ड दे दिया।

इस प्रकार का एक दूसरा आख्यान है। महान् पराक्रमी दैत्य हिरण्याक्ष तपस्या करने लगा। देवताओं ने आचार्य वृहस्पति से निवेदन किया, 'यह दुष्ट यदि सफल हो गया तो देवताओं का निर्वासन हो जाएगा। इसकी तपस्या में विघ्न डालें।' वृहस्पति ने स्वयं कुछ करना उचित नहीं समझा। उन्होंने अपना पालतू शुक हिरण्याक्ष के पास भेज दिया। हिरण्याक्ष कहता 'ब्रह्मणे नमः' तो शुक उसी की नकल करते हुए 'विष्णवे नमः' कहने लगा। एक-दो दिन तो हिरण्याक्ष के ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा किन्तु क्रमशः एक दो बार 'ब्रह्मणे' के स्थान पर 'विष्णवे' भी मुख से निकलने लगा। हिरण्याक्ष का ध्यान इधर गया तो उसने उठाया डंडा, 'विष्णु के पिट्ठू तोते।' तोता उड़ चला। हिरण्याक्ष की तपस्या खंडित हो गई। क्या बिगाड़ा था हिरण्याक्ष ने वृहस्पति का? एक कुटिल नीति से उसे परास्त करना वृहस्पति की कला थी- ऐसी विलक्षण प्रतिभा वाले वृहस्पति देवताओं के आचार्य थे। किन्तु शुक्राचार्य भी कम नहीं थे। उन्होंने अपने शिष्य की तपस्या पूर्ण करा ही ली।

(शेष अगले अंक में)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
रजि. केन्द्र
मुख्य केन्द्र
City Centre
अब आपकी सेवा में
आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
• कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी • कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
• रेटिना • कॉर्निया
• ग्लूकोमा • अल्प दृष्टि उपकरण • बाल नेत्र चिकित्सा
• भैंगापन • आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व बिश्नाई
• शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
• निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए प्रति आई केयर)

रविशा कंवर ने पाया स्वर्ण पदक

नागौर राजस्थान के जिले के बुटाटी गांव के किशनगढ़ (अजमेर) से रणजीतसिंह राठौड़ की पुत्री रविशा कंवर ने केन्द्रीय विश्वविद्यालय एम.ए. अंग्रेजी साहित्य में स्वर्ण पदक हासिल किया है। रविशा कंवर की इस उपलब्धि पर पूरे गांव के राठौड़ परिवार ने अपनी इस होनहार प्रतिभा को अभिनन्दन पत्र देकर सम्मान किया।

संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में सगाई

संघ के स्वयंसेवक बलवंतसिंह महणसर ने अपनी पुत्री नील कंवर की सगाई जैसलमेर के सनावड़ा निवासी चतुरसिंह के पुत्र हरिसिंह के साथ की है। सगाई की रस्म संघ प्रमुख श्री के जैसलमेर प्रवास के दौरान 25 नवम्बर को की गई। रस्म को ग्यारह रुपए एवं नारियल देकर सम्पूर्ण सादगी पूर्वक निभाया गया। हरिसिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं। संघ प्रमुखश्री ने इस अवसर पर कहा कि सामाजिक रस्मों को इस प्रकार सादगीपूर्वक निभाकर प्रदर्शन में किए जाने वाले अपव्यय को रोका जा सकता है। इसका समाज में अच्छा संदेश जाता है। संघ इसी सादगी एवं मितव्ययता को बढ़ावा देता है।

केश व कार लौटाई

थांवला निवासी नंदसिंह नरुका ने अपने पुत्र उगमसिंह नरुका के विवाह के अवसर पर वधु पक्ष की तरफ से दी गई नकद राशि व कार को लौटाकर अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। 23 नवम्बर को जोधपुर में विवाह के अवसर पर दुल्हन के पिता जसवंतसिंह राठौड़ की इस पेशकश को विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर मात्र एक रुपया शगुन के रूप में स्वीकार किया। इसी प्रकार संघ के स्वयंसेवक सांवलसिंह सनावड़ा ने भी अपने पुत्र की सगाई के अवसर पर टीके की रकम को अस्वीकार कर अनुकरणीय उदाहरण पेश किया। विगत दिनों स्वयंसेवक गणपतसिंह अवाय ने भी अपने पुत्र की सगाई बिना किसी लेन-देन के सादगी पूर्वक की। उन्होंने अपने बड़े पुत्र के विवाह में भी ऐसा ही किया था।

बाड़मेर में आयोजित हुआ टेस्ट

श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ द्वारा रीट एवं कांस्टेबल की तैयारी कर रहे समाज बंधुओं हेतु आयोजित टेस्ट सीरिज की शृंखला का द्वितीय टेस्ट 19 जनवरी रविवार को राणी रूपादे संस्थान में संपन्न हुआ। इसमें रीट परीक्षा के 100 प्रतिभागी एवं कांस्टेबल के 150 प्रतिभागियों ने परीक्षा दी। परीक्षा के बाद उन्हें एक साथ बैठाकर प्रश्न-पत्र हल करवाया गया जिससे वे स्वयं की जानकारी का आकलन कर सकें। उल्लेखनीय है कि विगत 5 नवम्बर को आयोजित काउंसलिंग कार्यक्रम में इस प्रकार की टेस्ट सीरिज आयोजित करने का निर्णय लिया था। प्रकोष्ठ से जुड़े कर्मचारी बंधुओं ने अपने स्तर पर विशेषज्ञों से सम्पर्क कर प्रश्न-पत्र बैंक बनाया है, अपने स्तर पर ही प्रश्न-पत्र मुद्रण करवाते हैं और फिर परीक्षा का आयोजन करते हैं। 26 नवम्बर को इस टेस्ट शृंखला का तीसरा टेस्ट श्री मल्लीनाथ महाविद्यालय छात्रावास में रखा गया। इसमें कांस्टेबल परीक्षा के 132 और रीट के 79 परीक्षार्थियों ने परीक्षा देकर अपनी तैयारी को जांचा।

थराद में पारिवारिक स्नेहमिलन

गुजरात के थराद कस्बे में रहने वाले परिवारों का एक पारिवारिक स्नेहमिलन 18 नवम्बर को आयोजित किया गया जिसमें 31 परिवारों के आबाल वृद्ध शामिल हुए। सांघिक परम्परानुसार आयोजित स्नेहमिलन में उपस्थित समाज बंधुओं को पूज्य तनसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ की विस्तृत जानकारी दी गई एवं अपने बालक-बालिकाओं को संघ के शिविरों एवं शाखाओं में भेजने का आग्रह किया गया। सभी ने साथ में भोजन किया एवं पारिवारिक भाव का अहसास किया।

सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार भारत के नागरिक का महत्वपूर्ण अधिकार है जो हमें सरकार के क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त कर उस पर नियंत्रण करने का साधन उपलब्ध करवाता है। सामाजिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह शेखावत ने इस संबंध में निम्न जानकारी प्रेषित की है।

भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में आम आदमी ही देश का असली मालिक होता है। इसलिए मालिक होने के नाते जनता को यह जानने का हक है कि जो सरकार उसकी सेवा के लिए बनाई गई है वह क्या, कहां और कैसे काम कर रही है। इसके साथ ही हर नागरिक इस सरकार को चलाने के लिए टैक्स देता है इसलिए भी नागरिकों को यह जानने का हक है कि उनका पैसा कहां खर्च किया जा रहा है। जनता के यह जानने का अधिकार ही सूचना का अधिकार है। 1976 में राज नारायण बनाम उत्तर प्रदेश मामले में उच्चतम न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 19 में वर्णित सूचना के अधिकार को मौलिक अधिकार घोषित किया। अनुच्छेद 19 के अनुसार हर नागरिक को बोलने और अभिव्यक्त करने का अधिकार है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि जनता जब तक जानेगी नहीं तब तक अभिव्यक्त नहीं कर सकती। 2005 में देश की संसद ने एक कानून पारित किया जिसे सूचना का अधिकार अधिनियमए 2005 के नाम से जाना जाता है। इस अधिनियम में व्यवस्था की गई है कि किस प्रकार नागरिक सरकार से सूचना मांगेंगे और किस प्रकार सरकार जवाबदेह होगी।

सूचना के अधिकार कानून के बारे में कुछ खास बातें

सूचना का अधिकार अधिनियम हर नागरिक को अधिकार देता है कि वह-

- सरकार से कोई भी सवाल पूछ सके या कोई भी सूचना ले सके।
- किसी भी सरकारी दस्तावेज़ की प्रमाणित प्रति ले सके।
- किसी भी सरकारी दस्तावेज की जांच कर सके।
- किसी भी सरकारी काम की जांच कर सके।
- किसी भी सरकारी काम में इस्तेमाल सामग्री का प्रमाणित नमूना ले सके।

सभी सरकारी विभाग, पब्लिक सेक्टर यूनिट, किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता से चल रही गैर सरकारी संस्थाएं व शिक्षण संस्थाएं आदि विभाग इसमें शामिल हैं। पूर्णतः निजी संस्थाएं इस कानून के दायरे में नहीं हैं लेकिन यदि किसी कानून के तहत कोई सरकारी विभाग किसी निजी संस्था से कोई जानकारी मांग सकता है तो उस विभाग के माध्यम से वह सूचना मांगी जा सकती है। (धारा 2 (क) और (ज)।)

हर सरकारी विभाग में एक या एक से अधिक लोक सूचना अधिकारी बनाए गए हैं। यह वह अधिकारी हैं जो सूचना के अधिकार के तहत आवेदन स्वीकार करते हैं, मांगी गई सूचनाएं एकत्र करते हैं और उसे आवेदनकर्ता को उपलब्ध कराते हैं। धारा 5 (1) के अनुसार लोक सूचना अधिकारी की जिम्मेदारी है कि वह 30 दिन के अन्दर (कुछ मामलों में 45 दिन तक) सूचना उपलब्ध् कराए। (धारा 7 (1)।)

अगर लोक सूचना अधिकारी आवेदन लेने से मना करता है, तय समय सीमा में सूचना नहीं उपलब्ध कराता है अथवा गलत या भ्रामक जानकारी देता है तो देरी के लिए 250 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से 25000 तक का जुर्माना उसके वेतन में से काटा जा सकता है। साथ ही उसे सूचना भी देनी होगी।

लोक सूचना अधिकारी को अधिकार नहीं है कि वह आपसे सूचना मांगने का कारण पूछे। (धारा 6 (2)।)

सूचना मांगने के लिए आवेदन फीस देनी होगी, केन्द्र सरकार ने आवेदन के साथ 10 रुपए की फीस तय की है लेकिन कुछ राज्यों में यह अधिक है। बीपीएल कार्ड धरकों से सूचना मांगने की कोई फीस नहीं ली जाती। (धारा 7 (5)।)

दस्तावेजों की प्रति लेने के लिए भी फीस देनी होगी। केन्द्र सरकार ने यह फीस 2 रुपए प्रति पृष्ठ रखी है लेकिन कुछ राज्यों में यह अधिक है। अगर सूचना तय समय सीमा में नहीं उपलब्ध कराई गई है तो सूचना मुफ्त दी जायेगी। (धारा 7 (6))

यदि कोई लोक सूचना अधिकारी यह समझता है कि मांगी गई सूचना उसके विभाग से सम्बंधित नहीं है तो यह उसका कर्तव्य है कि उस आवेदन को पांच दिन के अन्दर संबंधित विभाग को भेजे और आवेदक को भी सूचित करे। ऐसी स्थिति में सूचना मिलने की समय सीमा 30 की जगह 35 दिन होगी। (धारा 6 (3)।)

लोक सूचना अधिकारी यदि आवेदन लेने से इंकार करता है अथवा परेशान करता है तो उसकी शिकायत सीधे सूचना आयोग से की जा सकती है।

सूचना के अधिकार के तहत मांगी गई सूचनाओं को अस्वीकार करने, अपूर्ण, भ्रम में डालने वाली या गलत सूचना देने अथवा सूचना के लिए अधिक फीस मांगने के खिलाफ केन्द्रीय या राज्य सूचना आयोग के पास शिकायत कर सकते हैं।

लोक सूचना अधिकारी कुछ मामलों में सूचना देने से मना कर सकता है। जिन मामलों से सम्बंधित सूचना नहीं दी जा सकती उनका विवरण सूचना के अधिकार कानून की धारा 8 में दिया गया है।

लेकिन यदि मांगी गई सूचना जनहित में है तो धारा 8 में मना की गई सूचना भी दी जा सकती है।

जो सूचना संसद या विधानसभा को देने से मना नहीं किया जा सकता उसे किसी आम आदमी को भी देने से मना नहीं किया जा सकता।

यदि लोक सूचना अधिकारी निर्धारित समय-सीमा के भीतर सूचना नहीं देते हैं या धारा 8 का गलत इस्तेमाल करते हुए सूचना देने से मना करता हैं, या दी गई सूचना से सन्तुष्ट नहीं होने की स्थिति में 30 दिनों के भीतर सम्बंधित लोक सूचना अधिकारी के वरिष्ठ अधिकारी यानि प्रथम अपील अधिकारी के समक्ष प्रथम अपील की जा सकती है। (धारा 19 (1))

यदि आप प्रथम अपील से भी सन्तुष्ट नहीं हैं तो दूसरी अपील 60 दिनों के भीतर केन्द्रीय या राज्य सूचना आयोग, जिससे सम्बंधित हो, के पास करनी होती है। (धारा 19 (3)।)

राणी रुपादे के भव्य मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह

बाड़मेर जिले के जसोल कस्बे के निकट पालिया (तिलवाड़ा) में 23 नवम्बर को श्री राणी रुपादे मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। 19 नवम्बर को कलश यात्रा से प्रारम्भ हुए इस पांच दिवसीय महोत्सव के अंतिम दिन हजारों की संख्या में जहां श्रद्धालुओं एवं भक्तों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, वहीं जाने माने संत, महात्मा, जन प्रतिनिधि व समाजसेवी भी इस समारोह में उपस्थित हुए।

मारवाड़ में राठौड़ों के आदि पुरुष राव सीहाजी के वंशज रावल मल्लीनाथ जी ने चौदहवीं शताब्दी में पश्चिम राजस्थान में अपनी शूरवीरता, योग्यता एवं कूटनीति के बल पर विशाल भू-भाग पर मालाणी के नाम से अपनी रियासत कायम की थी। उनकी धर्मपत्नी राणी रूपादे धर्म परायण स्त्री थी और आध्यात्मिक प्रवृत्ति की होने के कारण रात्रि जागरण, सत्संग व धार्मिक चर्चा में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करती थीं जबकि रावल मल्लीनाथजी राजकार्य की प्रकृति के अनुसार अपनी जीवन शैली में जी

रहे थे।

रावल मल्लीनाथ जी को राणी रुपादे जी की प्रवृत्ति व प्रकृत्ति पसंद नहीं थी लिहाजा वे राणी रुपादे जी की गतिविधियों पर नजर रखने लगे। राणी रुपादे जी अपनी आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ती गईं और गुरु उगमसी भाटी के सानिध्य में रात्रि जागरण में चुपके-चुपके जाना, दलित व शोषित वर्ग जैसे मेघवाल, चमार आदि के साथ उठना-बैठना और उनके घर जाना तथा प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा का वास मानने की मान्यता को मानते हुए माली, घाची, प्रजापत आदि पिछड़ी जातियों को गले लगाना तथा अपने गुरु भाई मेघवाल धारू के घर आना-जाना जारी रखा। वे मुक्ति के मार्ग की ओर प्रेरित एक प्रसिद्ध संत के रूप में उभरी। कालांतर में अपनी धर्मपत्नी से प्रेरित होकर रावल मल्लीनाथजी ने भी इस पथ को अपनाया और पश्चिम राजस्थान विशेषकर मारवाड़, मालाणी एवं गुजरात के कच्छ क्षेत्र में राणी रुपादे जी एवं रावल मल्लीनाथ ने जन-जन के प्रातः स्मरणीय व मुक्ति के मार्ग की ओर ले जाने वाले संत के रूप में प्रसिद्धि पाई। चौदहवी शताब्दी में राणी रुपादे व रावल मल्लीनाथजी दलितों, शोषितों व पिछड़ों के आराध्य एवं लोकदेवता के रूप में उभरे। राणी रुपादे जी के पुराने मंदिर के स्थान पर नवीन भव्य मंदिर का निर्माण कार्य पिछले लगभग 15 वर्षों से चल रहा था, अब जब बन कर पूर्ण हुआ तब इसकी प्राण-प्रतिष्ठा का महोत्सव 19 नवम्बर से 23 नवम्बर तक रखा गया। मुख्य समारोह में राणी रुपादे जी की मूर्ति 23 नवम्बर को स्थापित की गई। इसी दिन इस समारोह के मुख्य यजमान श्री राणी भटियाणी मंदिर संस्थान जसोल के अध्यक्ष रावल किशनसिंह जी जसोल द्वारा मूर्ति स्थापना व अन्य धार्मिक कार्य संपन्न हुए।

इस अवसर पर साधु संतों में मुख्य रूप से चिड़ियानाथ का आसन पालासनी के महंत कैलाशनाथ, दूधेश्वर महादेव मठ के महंत नारायण गिरी जी, ब्रह्मधाम आसोतरा के महंत तुलसारामजी, तारातरा मठ के महंत प्रतापपुरी, मालाणी मठ के महंत ओंकार भारतीजी, वरियामठ के महंत नारायण भारतीजी, परेऊ मठ के महंत ओमकार भारती जी सहित लगभग सौ से अधिक साधु-सन्तों ने शिरकत की।

वहीं इस प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के आखिरी दिन श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख भगवानसिंह रोलसाहबसर, सिरोही के पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह, विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह शाहपुरा, राजस्व मंत्री अमराराम चौधरी, शिव विधायक मानवेन्द्रसिंह जसोल, विधायक रणधीर सिंह भीण्डर, सिवाना विधायक हमीरसिंह भायल, जैसलमेर विधायक छोटूसिंह, सिणधरी रावल विक्रमसिंह, बाड़मेर रावल त्रिभुवनसिंह सहित क्षेत्र के अनेक जनप्रतिनिधि, समाजसेवी आदि ने शिरकत की। इस अवसर पर महोत्सव में हैलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई तथा पांच दिवसीय भोजन, प्रसादी के लाभार्थी मोहनसिंह बुड़ीवाड़ा, दिलीपसिंह बुड़ीवाड़ा व डॉ. मनोहरसिंह बुड़ीवाड़ा सहित दानदाताओं को सम्मानित किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक के स्वयंसेवक ने व्यवस्थाएं संभालते हुए अपनी सेवा देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

'कलम अर कटार' पुस्तक का लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन

जोधपुर स्थित मारवाड़ राजपूत सभा भवन में कलम अर कटार व्हाट्सएप समूह के काव्य संकलन का लोकार्पण पद्मश्री नारायणसिंह माणकलाव, श्री चक्रवर्तीसिंह जोजावर, सुप्रसिद्ध साहित्यकार ठा. नाहरसिंह जसोल, ख्यातनाम कवि-आलोचक डॉ. आईदानसिंह भाटी, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा, कविवर मोहनसिंह रतनू व समूह के संरक्षक श्रवणसिंह राजावत द्वारा किया गया। लोकार्पण समारोह का आगाज विराजसिंह शेखावत द्वारा वंदना कर किया गया। तत्पश्चात महेंद्रसिंह छायण ने स्वागत उद्बोधन देते हुए 'कलम अर कटार' समूह की साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर श्रवणसिंह राजावत की अद्वितीय कृति यशोधरा का भी लोकार्पण किया गया। लोकार्पण समारोह में मदनसिंह सोलंकियातला, डॉ. रचना शेखावत व डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा द्वारा पत्रवाचन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नारायणसिंह माणकलाव ने कहा कि 'कलम अर कटार' के कवियों का यह प्रयास सराहनीय हैं। विशिष्ट अतिथि ठा. नाहरसिंह जसोल ने कहा कि यह कृति साहित्य की अमूल्य धरोहर है। चक्रवर्तीसिंह जोजावर ने क्षत्रिय साहित्यकारों के इस प्रयास के लिए बधाई देते हुए कहा कि साहित्य का संरक्षण होना जरूरी है। राजस्थानी के साहित्यकार डॉ. आईदानसिंह भाटी, मोहनसिंह रतनू, हनुमानसिंह खांगटा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। लोकार्पण समारोह में राजेंद्रसिंह भिंयाड़ ने भी विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात् 'कलम अर कटार' के मुख्य संरक्षक श्रवणसिंह राजावत ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम का गरिमामय मंच संचालन रतनसिंह चांपावत व दीपसिंह रणधा ने किया। द्वितीय सत्र में राजस्थान के वरिष्ठ कहानीकार मनोहरसिंह राठौड़ की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसमें 'कलम अर कटार' के कवि कल्याणसिंह शेखावत, मानसिंह मऊ, महेंद्रसिंह भेरूंदा, संग्रामसिंह सचियापुरा, अजयसिंह सिकरोड़ी, महेंद्रसिंह जाखली, शिवदानसिंह जोलावास, डॉ. रचना शेखावत, डॉ. अनुश्री राठौड़, डॉ. शक्तिसिंह खाखड़की, डॉ. तपेंद्रसिंह सुल्ताना, डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा, मदनसिंह सोलंकियातला, कृष्णपालसिंह राखी, लाखमसिंह गड़ा, विराजसिंह शेखावत, महेंद्रसिंह छायण, मेघराजसिंह लुणासर, नाथूसिंह खिरजां, पृथ्वीराजसिंह बेरू, कमल सुल्ताना व राजेंद्रसिंह सोलंकी ने कविताओं का निर्झर बहाते हुए कार्यक्रम में समां बांध दिया। अंत में समूह के संरक्षक एवं प्रशासनिक अधिकारी श्रवणसिंह राजावत ने सभी का आभार जताते हुए कृतज्ञता प्रकट की।

'शाखा में होता है सद्गुणों का अभ्यास'

शाखा का अर्थ है टहनी, (ब्रांच) इसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी वृक्ष का एक भाग है शाखा। जिस प्रकार एक पौधे की टहनियां पौधे को सौन्दर्य प्रदान करती हैं ठीक इसी प्रकार से शाखा हमारे भीतर संस्कारों का सृजन कर हमारे जीवन को आनंदमय बनाती है। यह भाषण या नारेबाजी का काम नहीं हैं। छोटी छोटी बातों से महान व्यक्तित्व का निर्माण करने का कर्म है। खेल-खेल में हम ईमानदारी सीखते हैं, अनुशासन सीखते हैं। अच्छी बातें सीखकर हम अपने दुर्गणों को हटाने का अभ्यास करते हैं। जो अपने दुर्गुणों को दूर करना चाहता हैं वह शाखा में आए और जो अपने दुर्गणों में ही संतुष्ट रहता है, उसके लिए कोई उपाय ही नहीं बचता, इसलिए स्वेच्छा संघ कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संघ में कोई सर्टिफिकेट नहीं मिलता, यहां तो सदैव जाग्रत रहने का अभ्यास करवाया जाता है। उपरोक्त सन्देश माननीय संघप्रमुखश्री ने जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय तनाश्रम में आयोजित जैसलमेर शहर प्रान्त की सामूहिक शाखा में दिया। सामूहिक शाखा में जवाहिर राजपूत छात्रावास, भटियाणी, माणिक्यलाल, गिरधर, मातेश्वरी, तनाश्रम, भोजदेव आदि छात्रावासों की शाखाओ के लगभग 100 स्वयंसेवक उपस्थित हुए। शाखा के पश्चात् सभी स्वयंसेवकों ने कार्यालय में श्रमदान किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org